वात्सल्य भाव

रसखान

कवि परिचय :

रसखान का नाम सैयद इब्राहिम था। इनका जन्म वि. संवत् 1615 में दिल्ली में हुआ था। रसखान श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे। वे रात दिन कृष्ण भक्ति में लीन रहने के कारण गोवर्धन में जाकर रहने लगे थे। कृष्ण के प्रति अगाध प्रेम ने रसखान को कवि बना दिया था। इनकी मृत्यु विक्रम संवत् 1685 में ठहरती है।

रसखान की मुख्य कृतियाँ हैं - 'सुजान रसखान' यह 136 छंदों का संग्रह है और 'प्रेम वाटिका' में केवल 25 दोहे हैं। रसखान के काव्य का विषय कृष्ण प्रेम है। इनका एक-एक शब्द कृष्ण भक्ति से सराबोर है। श्रृंगार के दोनों पक्षों का सुन्दर एवं सजीव चित्रण दिखाई देता है। रसखान के काव्य की भाषा शुद्ध, सरस और मधुर ब्रज भाषा है। भाषा में प्रवाह और प्रौढ़ता के साथ सरलता और मधुरता के दर्शन होते हैं। मुहावरों का सुन्दर व स्वाभाविक प्रयोग होने से भाषा में सजीवता दिखाई देती है। रसखान ने सवैया कवित्त और दोहा छंद प्रचुरता से लिखे हैं। भक्तिकाल के कृष्ण भक्त कवियों में रसखान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। श्रीकृष्ण की भक्ति में अनुरक्त होकर उन्होंने अपनी कविताएँ लिखीं। काव्य एवं पिंगल शास्त्र का उन्होंने गहन अध्ययन किया। वे अत्यन्त भावुक सहृदय और प्रेमी जीव थे। इनके नीति संबंधी दोहे भी प्रासंगिक हैं।

शिशु ईश्वर की अनुपम कृति है। शिशु की बाल सुलभ-चेष्टाएँ निश्छल, स्वच्छन्द, चंचल निष्कपट और मनभावन हैं। कृष्ण की मनोमुग्धकारी बाल छवि से कवि इतने अधिक आकर्षित हुए हैं कि उनकी लेखनी बालसौन्दर्य चित्रित करने के लिए विवश हो गई है। महाकवि सूरदास ने भक्तिकाल में वात्सल्य रस को सर्वोच्च शिखर तक पहुँचाया है, उसी रसधारा को रसखान ने अपनी रचनाओं में आगे बढ़ाया है। कविवर रसखान, बालकृष्ण की छवि देख इतने मुग्ध और भावविभोर हो गए कि वे कृष्ण के रंग में रंग गए। वे यशोदा के आँगन में बालकृष्ण को खेलता देख, उनकी मोहनी छवि पर संसार के समस्त सौन्दर्य को न्योछावर करने के लिए उतावले हो उठे।

इसी प्रकार आधुनिक काल की कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान ने वात्सल्य भाव को अपने काव्य में बड़ी सहजता के रंग से संजोया है। उन्हें अपनी बिटिया की वात्सल्य चेष्टाओं को देखकर अपना बचपन याद आ जाता है, जिसे उन्होंने 'मेरा नया बचपन' कविता में साकार किया है। वात्सल्य प्रेम को लक्ष्य कर लिखी गई यह कविता 'मील का पत्थर' कही जा सकती है। प्रस्तुत कविता में उनका मातृ हृदय साकार हो उठा है। वे अनेक यशस्वी प्रतीकों के रूप में बचपन को देखती हैं। इस प्रकार उन्होंने माँ और शिशु के मध्य रागात्मक सम्बन्धों का नैसर्गिक चित्रण किया है।

रसखान के सवैए

1.

आजु गई हुती भोर ही हौं, रसखानि रई वहि नंदके भौनहिं।
वाको जियौ जुग लाख करोर, जसोमति को सुख जात कह्यौ नहिं।।
तेल लगाई लगाइ कै अंजन, भौहैं बनाइ बनाइ डिठौनहिं
डारि हमेल निहार निहारत वारत ज्यौं पुचकारत छौनहिं ॥

2.

धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी ।
खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैंजनी बाजति पीरी कछोटी ॥
वा छबि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निधि कोटी ।
काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी ॥

सुभद्राकुमारी चौहान

कवि परिचय :

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, राष्ट्रीय चेतना की अमर गायिका सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 ई0 में इलाहाबाद के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। वे वीर रस की ओजस्विनी कवयित्री थीं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से प्रभावित होकर वे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने लगीं। उन्होंने कई बार जेल यात्राएँ भी कीं और जन-जन में देश प्रेम की भावना का प्रसार किया। इनकी मृत्यु अप्रैल सन् 1948 में हुई।

मुकुल और त्रिधारा (काव्य-संग्रह) सीधे सादे चित्र, बिखरे मोती तथा उन्मादिनी (कहानी) आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं मुकुल काव्य संग्रह पर आपको सेकसरिया पुरस्कार प्रदान किया गया।

अपनी ओज पूर्ण वाणी में उन्होंने राष्ट्रीयता की भावना को सुदृढ़ अभिव्यक्ति दी। भारतीयों में नवचेतना, त्याग, बलिदान की बलवती इच्छा जगाने में सुभद्राकुमारी चौहान की वाणी और उनके काव्य की महती भूमिका है। उनकी भाषा में सादगी, सरलता और स्वाभाविकता के दर्शन होते हैं। पारिवारिक जीवन की छटा खींचने में वे सिद्धहस्त हैं। 'मैं बचपन को बुला रही थी' जैसी पंक्तियों में वात्सल्य की पूर्ण मधुर व्यंजना है। देशप्रेम की भावना को काव्यात्मक स्वर प्रदान करने वाली कवयित्री के रूप में वे विख्यात हैं। अलंकारों, प्रतीकों के मोह में न पड़कर अपनी अनुभूतियों को सहजता से व्यक्त करने वाली सुभद्राकुमारी चौहान का हिन्दी साहित्याकाश में विशेष स्थान है। उन्होंने ओजपूर्ण वाणी से भारतीयों में नवचेतना का संचार किया, तो वात्सल्य से ममत्व का। वे नारी जगत के लिए गौरव हैं।

मेरा नया बचपन

बार-बार आती है मुझको, मधुर याद बचपन तेरी ।
गया, ले गया तू जीवन की, सबसे मस्त खुशी मेरी ।।
चिन्ता रहित खेलना खाना, फिर फिरना निर्भय स्वच्छन्द।
कैसे भूला जा सकता है, बचपन का अतुलित आनन्द।।

ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था छुआछूत किसने जानी?
बनी हुई थी आह झोपड़ी, और 'चीथड़ों' में रानी।।
रोना और मचल जाना भी, क्या आनन्द दिखाते थे।
बड़े-बड़े मोती से आँसू, जयमाला पहनाते थे।।

वह भोली-सी मधुर सरलता, वह प्यारा जीवन निष्पाप।
क्या फिर आकर मिटा सकेगा, तू मेरे मन का सन्ताप?
मैं बचपन को बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी।
नन्दन-वन-सी फूल उठी वह, छोटी-सी कुटिया मेरी।।

'माँ ओ' कहकर बुला रही थी, मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में कुछ लिए हाथ में, मुझे खिलाने लाई थी।।
मैंने पूछा-''यह क्या लाई?'' बोल उठी वह, ''माँ, काओ।''
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से, मैंने कहा, ''तुम्ही काओ।।''

पाया बचपन फिर से मैंने, बचपन बेटी बन आया।
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर, मुझमें नव जीवन आया ॥
मैं भी उसके साथ खेलती, खाती हूँ, तुतलाती हूँ।
मिलकर उसके साथ स्वयं, मैं भी बच्ची बन जाती हूँ।।

अभ्यास

बोध प्रश्न

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्नः-

1. कवि ने कौए के भाग्य की सराहना क्यों की है?
2. डिठौना किसे कहते हैं?
3. बचपन की याद किसे आ रही है?
4. बच्ची माँ को क्या खिलाने आई थी?
5. ऊँच-नीच का भेद किसे नहीं है, और क्यों?

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्नः-

1. कवि रसखान बाल कृष्ण की छवि पर क्या न्यौछावर कर देना चाहते हैं?
2. कवयित्री ने बचपन के आनन्द को पुनः कैसे पाया?
3. उस पंक्ति को लिखिए जिनका आशय है-
   (क) सुखी जसौदा का पुत्र करोड़ों वर्ष जीवित रहे।
   (ख) बचपन के आनन्द को कैसे भूला जा सकता है?

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्नः-

1. यशोदा माँ बालक कृष्ण को किस प्रकार सजाती सँभालती है?
2. धूल में लिपटे बाल कृष्ण की शोभा का वर्णन कीजिए।
3. 'मेरा नया बचपन' कविता का मुख्य भाव अपने शब्दों में लिखिए।
4. रसखान और सुभद्रा कुमारी चौहान के 'वात्सल्य' में क्या अन्तर हैं?
5. निम्नलिखित काव्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या लिखिए-
   अ- वह भोली - सी मधुर सरलता, वह प्यारा जीवन निष्पाप।
   क्या फिर आकर मिटा सकेगा, तू मेरे मन का सन्ताप?
   आ- मैं भी उसके साथ खेलती, खाती हूँ, तुतलाती हूँ।
   मिलकर उसके साथ स्वयं, मैं भी बच्ची बन जाती हूँ।।
   इ- आजु, गई हुती भोर ही हों, रसखानि रई वहि नन्द के भौनहिं
   वाको जियो जुग लाख करोर, जसोमति को सुख जात कह्यो नहि।
6. कवयित्री ने बचपन के आनन्द को अतुलित आनन्द क्यों कहा है?

काव्य सौन्दर्य-

1. **निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी मानक रूप लिखिए-**

   हौं, जियौ, जुग, आजु, काओ।

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

जीवन, ऊँच, पाप

3. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार पहचान कर लिखिए-

(क) नन्दन-वन-सी फूल उठी वह, छोटी-सी कुटिया मेरी ।

(ख) बार-बार आती है मुझको, मधुर याद बचपन तेरी।

(ग) मैं बचपन को बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी ।

(घ) धूरि भरि अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।

4. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सौं लै गयो माखन रोटी।

(ख) डारि हमेल निहार निहारत वारत ज्यों पुचकारत छौनहिं।

(ग) पाया बचपन फिर से मैंने, बचपन बेटी बन आया।

(घ) बड़े-बड़े मोती से आँसू, जयमाला पहनाते थे।

"कविता में जहाँ माता-पिता और पुत्र के बीच के क्रिया-कलापों में प्रेम (स्नेह) भाव का वर्णन हो, वहाँ वात्सल्य रस होता है। इसका स्थायी भाव वत्सल (पुत्र-प्रेम) है।"

इसी तरह गुरु-शिष्य का प्रेम भी वात्सल्य रस के अन्तर्गत आता है।

5. कविता में उपमा अलंकार की बहुलता है। पढ़िए और उपमा अलंकार रेखांकित कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. बचपन से संबधित अन्य कवियों की कविताओं का संकलन करके फाइल बनाइए।
2. अपने बचपन की मधुर स्मृति के आधार पर एक कहानी लिखिए।
3. 'मेरा बचपन' शीर्षक पर एक फोटो एलबम तैयार कीजिए जिसमें अपने चित्रों के साथ एक आठ पंक्ति की कविता भी लिखें।
4. 'मैं बचपन को भूली नहीं थी' में लेखिका को बचपन याद आ जाता है - इसी आधार पर आप भी अपने बचपन को याद करके एक अनुच्छेद लिखिए।
5. 'बचपन' की स्मृति के कुछ चित्र आपके एलबम में होंगे आयु क्रम से उनको व्यवस्थित कीजिए।

शब्दार्थ

भोर - प्रातः काल, धूरि - धूल, हौं - मैं, पैंजनी - घुँघरू, छवि - शोभा, वाको - उसका
वारत - न्यौछावर करना, अंजन - काजल, काग - कौआ, निहारत - देखना, सजनी - सखी, छौंनहि - पुत्र,
निर्भय - बिना भय के, प्रफुल्लित - प्रसन्न, स्वच्छन्द - स्वतंत्र, मंजुल - सुन्दर,
अतुलित-जिसकी तुलना न की जा सके, चीथड़ों - फटे-पुराने कपड़े , सन्ताप - दुःख, कुटिया - झोपड़ी, कुटीर

* * *